



# योगी गुरु जी के प्रश्नोत्तर

भाग 1 • 100 चुने हुए प्रश्न और उत्तर

**आध्यात्मिक प्रत्यक्ष ज्ञान मार्ग**

adhyatmikpratyakshgyan.com • निःशुल्क

## इस पुस्तक के बारे में

ये प्रश्न सत्संग में साधकों ने योगी गुरु जी से पूछे। उत्तर योगी गुरु जी के अपने शब्दों में हैं, जैसे वेबसाइट के प्रश्नोत्तर संग्रह (भाग 1-29) में दर्ज हैं। हर उत्तर के नीचे सत्संग की तारीख और पूरा प्रश्नोत्तर पढ़ने का पता दिया गया है।

योगी गुरु जी साधकों के प्रश्नों के उत्तर केवल YouTube चैनल “आध्यात्मिक प्रत्यक्ष ज्ञान सत्संग” पर live सत्संग में ही देते हैं; वे किसी से निजी बात नहीं करते।

वेबसाइट: [adhyatmikpratyakshgyan.com](http://adhyatmikpratyakshgyan.com)

YouTube चैनल: आध्यात्मिक प्रत्यक्ष ज्ञान सत्संग

[youtube.com/channel/UCMivrefGXWxa2kD6qP0PbDw](https://youtube.com/channel/UCMivrefGXWxa2kD6qP0PbDw)

## विषय-सूची

|                            |           |
|----------------------------|-----------|
| 1. ईमानदारी और सत्कर्म     | 10 प्रश्न |
| 2. सेवा और जरूरतमंद        | 10 प्रश्न |
| 3. गुरु और सत्संग          | 10 प्रश्न |
| 4. आत्मज्ञान और मुक्ति     | 10 प्रश्न |
| 5. मन, इच्छा और कामना      | 10 प्रश्न |
| 6. डर, दुख और उम्मीद       | 10 प्रश्न |
| 7. परिवार और गृहस्थ जीवन   | 10 प्रश्न |
| 8. पैसा, नौकरी और काम-धंधा | 10 प्रश्न |
| 9. साधना और एकांत          | 10 प्रश्न |
| 10. अपनों की कुटिया        | 10 प्रश्न |

## ईमानदारी और सत्कर्म

---

**प्रश्न 1.** लेन देन क्या है, जो मोक्ष में बढ़ा देता है? गुरु जी, कृपया इसके बारे में बताएँ।

**उत्तर:** ईमानदारी, सत्कर्म, और सत्संग सुनोगे, तो समझ में आ जाएगा कि लेन देन क्या है। क्योंकि लेन और देन, आप जब देते हो, जब बेईमानी करते हो, तो लेन देन बढ़ जाता है। और जब आप ईमानदारी से देते हो, तो सामने वाले की उम्मीद छूट जाती है, और आप भी छूट जाते हो। तो ईमानदारी और सत्कर्म अपनाओ, और ऐसा लेन देन करो, मुक्ति पाओ।

सत्संग: 2026-04-05 · प्रश्नोत्तर P7-0133 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P7-0133/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P7-0133/)

**प्रश्न 2.** योगी जी, आपका ज्ञान समझती हूँ और उस पर चलने की कोशिश भी करती हूँ, पर जो संकल्प करती हूँ उस पर टिके रहना मुश्किल होता है। कभी-कभी परिस्थिति ऐसी बनती है कि गृहस्थी के हिसाब से रहना पड़ता है। ऐसे में क्या करें?

**उत्तर:** किसी भी हिसाब से रहिए। संकल्प करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि संकल्प आप करते हो तो विकल्प आ जाता है। तो आप सीधा ईमानदारी, सत्कर्म अपना लीजिए, सत्संग सुनिए। बस, बात खत्म; इसमें संकल्प की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

सत्संग: 2026-03-08 · प्रश्नोत्तर P10-0181 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0181/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0181/)

**प्रश्न 3.** आत्मज्ञान पाने का सबसे आसान तरीका क्या है, जो रास्ते में भटके बिना आत्मज्ञान तक ले जाए — अच्छे कर्म और ईमानदारी, या आध्यात्मिक चिंतन?

**उत्तर:** ईमानदारी तो मूल है भाई। ईमानदारी-सत्कर्म अपनाने के बाद ही कुछ होगा; ईमानदारी और सत्कर्म के बिना कल्याण नहीं है — ना कोई कर सकता है, ना तुम ही कर सकते हो। ईमानदारी-सत्कर्म को मुख्य रूप से अपनाओ, फिर जितना भी करोगे, साधना अपने आप होती चली जाएगी।

सत्संग: 2026-01-04 · प्रश्नोत्तर P12-0051 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0051/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0051/)

**प्रश्न 4.** गुरु जी, ईमानदारी तो बहुत ही महंगी है — यह हमसे खरीदी ना जाए तो?

**उत्तर:** तो मत खरीदो ना, कौन आपसे कह रहा है खरीदो? जिसमें जीना है उसमें जियो। ईमानदारी खरीदी नहीं जाती, ईमानदारी में जीना पड़ता है।

सत्संग: 2026-10-08 · प्रश्नोत्तर P12-0169 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0169/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0169/)

**प्रश्न 5.** गुरु जी, अगर आत्मदर्शन की जरा सी भी इच्छा है तो यात्रा की शुरुआत कैसे करें?

**उत्तर:** सर्वप्रथम कर्म के प्रति छल, कपट, चोरी, बेईमानी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड — इन आठ में से एक भी मत करो। दिखावा छोड़ दो, बड़ा-छोटा बनने की इच्छा का त्याग करो, योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग करो — अब यात्रा की शुरुआत होगी। ईमानदारी अपनाओ (ईमानदारी स्वाभाविक होती है, करनी नहीं पड़ती) और सत्कर्म में लग जाओ। इतना अपनाओगे तब शुरुआत होगी — अपने को समझने की नहीं, निर्विकार होने की। जैसे-जैसे निर्विकार होंगे, अपने करीब जा रहे हैं, धीरे-धीरे आपको अपने होने का एहसास होने लगेगा, और जब पूरी तरह निर्विकार हो जाएंगे तो आत्मदर्शन हो जाएगा, बात ही खत्म। यह नहीं अपनाएं तो कभी नहीं हो सकता।

सत्संग: 2024-09-21 · प्रश्नोत्तर P17-0069 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0069/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0069/)

**प्रश्न 6.** गुरु जी, सारे महापुरुषों ने मूल रूप से क्या सिखाया? जीते जी मुक्ति और मोक्ष कैसे होता है?

**उत्तर:** अभी तक जितने महापुरुष हुए, उन्होंने बस एक ही बात कही — ईमानदारी अपनाकर सत्कर्म करो; इसके बाहर कोई बोला ही नहीं, बोल ही नहीं सकता। यही मूल है, और लोग यही नहीं अपनाते। महापुरुषों ने सत्संग में जीने का तरीका बताया, और तरीके में बस इतना — ईमानदारी अपना के सत्कर्म में लग जाओ। जितनी किताबें लिखी गईं, इसके अंदर ही लिखी गईं। मुक्ति तो तुरंत है — ईमानदारी अपना लो, मुक्त हो गए, आगे का बंधन बनेगा नहीं। सत्कर्म करोगे तो रोम-रोम से आशीर्वाद मिलेगा, विकारों से मुक्ति में सहायता मिलेगी, और अपने कर्म का भोग भोगते हुए मोक्ष तक पहुंच जाओगे। कितना सीधा, सरल रास्ता है। कृष्ण भगवान ने अर्जुन को ज्ञान दिया तो अर्जुन ने कोई विधि नहीं की, समझते-समझते उपलब्धि हो गई।

सत्संग: 2024-09-29 · प्रश्नोत्तर P19-0009 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P19-0009/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P19-0009/)

**प्रश्न 7.** गुरु जी, आप कहते हो अपने तरीके से कुछ करोगे तो द्वेष आएगा — इसका क्या मतलब? अगर कोई हमारे तरीके से काम न करे तो भी तो द्वेष आएगा ना?

**उत्तर:** जब मैं कोई भी काम कर रहा हूँ तो किसी के द्वारा ही कर रहा हूँ, अकेले तो कर नहीं सकता; मेरे अपोजिट में कोई है। तो काम को काम के तरीके से करो — ना मेरा तरीका, ना उसका तरीका — तो राग-द्वेष नहीं होगा। अपने तरीके से करोगे तो भी राग-द्वेष होगा, उसके तरीके से करोगे तो भी। दबाव-संकोच पर काम मत करो। आपको कोई भी काम मिला है, आपने कोई काम लिया है, तो काम को काम के तरीके से करो, तो राग-द्वेष नहीं होगा, बंधन नहीं होगा, वही मुक्ति का मार्ग बन जाएगा; और पूरी ईमानदारी से करो, उसमें कुछ मिलावट मत करो। हर कार्य का खुद का तरीका होता है।

सत्संग: 2026-07-19 · प्रश्नोत्तर P21-0088 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0088/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0088/)

**प्रश्न 8.** गुरु जी, ईमानदारी का मतलब क्या है? ये कैसे पता चले कि ईमानदारी है या ऊपर-ऊपर से ईमानदारी का नाटक चल रहा है? क्योंकि हर आदमी खुद को सच्चा और ईमानदार ही मानता है।

**उत्तर:** जब आपके द्वारा कर्म हो रहा है, तो बस इतना देख लीजिए कि उसमें छल, कपट, चोरी, बेईमानी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड ना हो। बस खत्म बात, तब आप ईमानदार हैं। ये तो खुद ही देखना पड़ेगा, दूसरा कोई है ही नहीं।

सत्संग: 2026-08-06 · प्रश्नोत्तर P24-0078 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0078/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0078/)

**प्रश्न 9.** गुरुदेव, संसार में ईमानदारी और सच्चाई से चलने वाले असफल होकर सबसे पीछे रह जाते हैं, जबकि झूठ बोलने वालों को सब कुछ मिल जाता है — ऐसा क्यों?

**उत्तर:** तो देख लो — आपको सब कुछ चाहिए तो झूठ बोलो, और आपको कुछ नहीं चाहिए तो सच्चाई में जियो। निर्णय आपके हाथ में है। मुझे तो ऐसा लगता है कि सबसे अच्छा जीवन ईमानदारी का है। जमीन से उठकर डाइनिंग टेबल तक पहुंचने के लिए इतने लोगों का शोषण करने की क्या जरूरत है? आराम से जियो। और ऐसा नहीं है कि हर करोड़पति बेईमान ही है — ईमानदारी से भी लोग करोड़पति हैं; बहुत ऐसे उद्योगपति हैं जिन्होंने ईमानदारी से जीवन जिया है।

सत्संग: 2024-09-05 · प्रश्नोत्तर P26-0188 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0188/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0188/)

**प्रश्न 10.** गुरु जी, जो इंसान ईमानदारी पकड़ ले, क्या वह 100% निकल जाएगा?

**उत्तर:** ईमानदारी और सत्कर्म दोनों। कंजूस ईमानदार भी नहीं पहुंच पाएगा। ईमानदारी तुमने पकड़ ली तो आगे का बंधन नहीं बंध रहा है, लेकिन पिछले का क्या होगा? वह सत्कर्म से ही कटेगा। ईमानदारी के साथ सत्कर्म और सत्संग — ये तीन चीजें जरूरी हैं निकलने के लिए। निकल गए तो तीनों छूट जाती हैं — जैसे कपड़े में मैल लगा है तो साबुन-पानी लगाते हो; आखिर में मैल, पानी, साबुन तीनों चले जाते हैं, कपड़ा साफ बचता है।

सत्संग: 2026-10-20 · प्रश्नोत्तर P29-0088 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0088/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0088/)

## सेवा और जरूरतमंद

---

**प्रश्न 11.** गुरु जी, कैसे पता चले कि सामने वाला जरूरतमंद है? वह झूठ भी तो बोल सकता है।

**उत्तर:** कोई बात नहीं, समझ से देखते जाओ — झूठ बोलेगा तो पता भी चलता है। मान लीजिए वह जरूरतमंद नहीं है और बोल रहा है मुझे भूख लगी है, भोजन दो — ठीक है, भोजन ले और मेरे सामने खा, बस हो गया; इतना समय दो। आदमी (झूठ) बोलने से कतराता है; कतराता है तो भी समझ जाता है।

सत्संग: 2025-02-01 · प्रश्नोत्तर P3-0156 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P3-0156/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P3-0156/)

**प्रश्न 12.** हम लोग बेजुबानों का एक गुप पिछले छह साल से चला रहे हैं; अपनी तरफ से पूर्ण (100%) सेवा दे रहे हैं, पर जीवन में शांति नहीं मिलती। गलती कहां हो रही है?

**उत्तर:** शांति तो आपकी समझ से होगी ना। शांति कहां से होगी? आपकी समझ से होगी। अब समझ ही विकसित नहीं हो रही है, और आप सेवा कर रहे हो किसी की, तो कोई मतलब नहीं है। समझ को विकसित करो।

सत्संग: 2026-03-01 · प्रश्नोत्तर P4-0013 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P4-0013/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P4-0013/)

**प्रश्न 13.** देश से बाहर रहते हों तो सत्कर्म किस प्रकार कर सकते हैं?

**उत्तर:** जरूरतमंद की सेवा करो। हर जगह है क्या। देश के बाहर लोग रास्ते पर नहीं गिरते, बीमार नहीं होते क्या। जरूरत नहीं पड़ती क्या। कितनी भी व्यवस्था कर दो, आदमी गिर तो जाता ही है। चलते-चलते उठा दो। सत्कर्म का मौका मिलता ही है। दुनिया में कितनी भी व्यवस्थाएँ कर लो, यह होता ही रहता है।

सत्संग: 2025-03-13 · प्रश्नोत्तर P7-0058 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P7-0058/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P7-0058/)

**प्रश्न 14.** मैं तो बहुत ईमानदार था, पर लोगों की नजरों में मुझसे अच्छे वे निकले जो (पैसे के लेन-देन में) कुख्यात थे। ईमानदारी बड़ी जिम्मेदारी है — एक ईमानदार से बड़ा कोई तपस्वी नहीं।

**उत्तर:** सिर्फ ईमानदार नहीं — पता चला आप ईमानदार हो लेकिन सत्कर्मी नहीं हो, तो कंजूस ईमानदार का जीवन में कोई मतलब नहीं; ऐसे बहुत लोग मिल जाएंगे। ईमानदारी, सत्कर्म, जरूरतमंद की सेवा, और सत्संग — ये सबसे जरूरी है। अगर ये करते हो तब आपकी ईमानदारी का जीवन में मतलब है; ईमानदारी करते हो और सत्कर्म नहीं करते, तो ऐसी ईमानदारी का कोई मतलब नहीं। एकदम साफ-सुथरी बात बता रहा हूं।

सत्संग: 2026-10-08 · प्रश्नोत्तर P12-0178 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0178/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0178/)

**प्रश्न 15.** गुरु जी, जब हम किसी जीव को बिना कामना के भोजन कराते हैं तो अंदर से अच्छा लगता है, सुकून मिलता है — ऐसा क्यों होता है?

**उत्तर:** क्योंकि उस समय चाह चली गई — सीमित वाला खत्म हुआ और असीमित में आ गए, तो एहसास होता है, सुकून मिलता है। इसीलिए कहा गया — सर्वप्रथम भूखे को भोजन, प्यासे को पानी; अन्नदान महादान। लेकिन कहां? जहां जरूरत है वहां; जहां जरूरत नहीं वहां नहीं — ऐसा ना हो कि आपने अनाज दिया और वह सड़ रहा है। धन, तन, ज्ञान — यह सेवा जरूरतमंद को देना, जहां उसकी जरूरत और उपयोग हो।

सत्संग: 2024-09-21 · प्रश्नोत्तर P17-0090 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0090/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0090/)

**प्रश्न 16.** प्रभु जी, सत्कर्म और सेवा में क्या अंतर है?

**उत्तर:** सेवा आप उसकी भी करते हो जिसे जरूरत नहीं है, और सत्कर्म उसकी करते हो जिसे जरूरत है। सेवा में वह व्यक्ति आपको आशीर्वाद देता है, और सत्कर्म में उस परम सत्ता से आशीर्वाद आता है। सेवा करने में आप उसके लिए एक व्यक्ति हो, और सत्कर्म करने में जिसके लिए आप सत्कर्म कर रहे हो उसके लिए आप एक भगवान हो। सत्कर्म आपको भगवान बनाता है, सेवा आपको देवता बनाती है। आपको क्या बनना है? कुछ नहीं बनना है — बनने से मुक्त होना है।

सत्संग: 2025-04-21 · प्रश्नोत्तर P22-0066 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0066/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0066/)

**प्रश्न 17.** गुरु जी, सीधे शब्दों में बताइए — असल में जरूरतमंद कौन है, उसका लक्षण क्या है? मुझे भी जानना है।

**उत्तर:** जरूरतमंद मतलब — आपने भोजन दिया, उसने उसका उपयोग कर लिया; कपड़ा दिया, पहन लिया; दवा दी, खा ली; बीमार है, घाव लगा है, आपने मलहम लगा दिया — आपके सामने ही वह जरूरतमंद है। कोई गिर गया, आपने उठा के हॉस्पिटल पहुंचा दिया — वह जरूरतमंद है। आप जा रहे थे, किसी को लिफ्ट दे दी — वह जरूरतमंद है। यह जरूरतमंद है।

सत्संग: 2025-04-20 · प्रश्नोत्तर P22-0093 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0093/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0093/)

**प्रश्न 18.** गुरुदेव, ट्रेन की बोगियों में विकलांग लोग आते हैं, पैर से दिखते भी हैं कि विकलांग हैं, लेकिन बाहर जाने के बाद मद का सेवन जैसे अनर्गल काम करते हैं — तो उन्हें पैसा देना क्या सही होता है?

**उत्तर:** नहीं देना चाहिए। खाने वाला सामान दे दो — वो भी पैकेट खोल के, बिस्कुट दो तो खोल के दो, ताकि बेच ना पाए। नहीं ले तो मत दो, रख लो, आप खा लो, कुत्ते को खिला दो। ऐसे लोगों को मत दो — जरूरतमंद को दो।

सत्संग: 2025-03-07 · प्रश्नोत्तर P23-0064 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0064/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0064/)

**प्रश्न 19.** गुरु जी, पैसे हैं नहीं — सेवा कैसे करें और आत्मज्ञान कैसे प्राप्त करें?

**उत्तर:** पैसे से सेवा नहीं होती है। सेवा जरूरतमंद की होती है। जैसे मान लीजिए आप भोजन तो रोज करते ही हैं — चाहे जैसे भी मिले, एक टाइम या दो टाइम। तो एक दिन का उपवास रखो, और एक वक्त का भोजन किसी को खिला दो। ये भी सत्कर्म है। आपके पास दो-तीन कपड़े हों, तो दो से काम चलाओ और एक किसी जरूरतमंद को दे दो। बहुत आसानी से सत्कर्म कर सकते हो।

सत्संग: 2026-08-06 · प्रश्नोत्तर P24-0082 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0082/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0082/)

**प्रश्न 20.** गुरु जी, दान किसको दें, किसको ना दें, और दान की सही आवश्यकता है — यह कैसे जानें?

**उत्तर:** जरूरतमंद को दें। और नहीं जान पा रहे हैं तो आप दान दो ही मत, क्या जरूरत है दान करने की? अगर जांचने की क्षमता है तो दो — जरूरत देखिए; जिसे जरूरत हो, उसका सदुपयोग हो, तो दो; नहीं तो मत दो। और नहीं जांच पा रहे हो तो पड़े रहो जहां पड़े हो।

सत्संग: 2026-06-14 · प्रश्नोत्तर P26-0063 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0063/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0063/)

## गुरु और सत्संग

**प्रश्न 21.** गुरु जी, ये ज्ञान लेने के लिए गुरु के पास जाना चाहिए या अपने आप सत्संग सुनते रहें?

**उत्तर:** हां भाई, वो तो जाना ही पड़ेगा — शिक्षा लेने के लिए विद्यालय जाना पड़ता है। सत्संग सुनते रहो, आते-जाते रहो, धीरे-धीरे समझ में आएगा। सुनते हुए भी मन में कुछ आए कि यार ये कैसे होता है, तो अपनी डायरी में नोट कर लो, और जब जाओ तो पूछ लो। ज्ञान लेना है तो सत्संग में तो जाना ही पड़ेगा।

सत्संग: 2026-03-06 · प्रश्नोत्तर P14-0072 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P14-0072/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P14-0072/)

**प्रश्न 22.** कौन सा शिष्य योग्य है, कौन अयोग्य — ये गुरु द्वारा कैसे तय किया जाता है? शिष्य गुरु चुनता है या गुरु शिष्य?

**उत्तर:** शिष्य गुरु चुनता है। गुरु को शिष्य चुनने की जरूरत नहीं होती, क्योंकि गुरु चुनने से मुक्त हो जाता है। शिष्य को गुरु चुनना पड़ता है; शिष्य होना बड़ा कठिन काम है।

सत्संग: 2026-08-10 · प्रश्नोत्तर P15-0068 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P15-0068/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P15-0068/)

**प्रश्न 23.** बाबा, अभी तो गुरु भी नहीं मिला; हम तो मनमुखी आदमी हैं। गुरु के बिना क्या करें?

**उत्तर:** गुरु शब्द है, बाबा। दत्तात्रेय ने 24 गुरु बनाए, लेकिन बनाया एक भी नहीं — देखकर ज्ञान लिया, माना, सम्मान दिया। गुरु ज्ञान का प्रतीक है; गुरु शब्द है, शरीर नहीं। शरीर को मत पकड़ो, शब्द को पकड़ो और आगे बढ़ जाओ। प्यास बुझाओ नल से, नल को मत पूजो — नल झूठा है, पानी सच्चा है। ज्ञान को लो और आगे बढ़ जाओ; इस पर चलोगे तो अपने आप मिलते रहेंगे। नल को पकड़कर बैठने की कोई जरूरत नहीं। व्यक्ति विशेष को कभी मत पकड़ना, फंस जाओगे।

सत्संग: 2024-01-14 · प्रश्नोत्तर P16-0138 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P16-0138/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P16-0138/)

**प्रश्न 24.** गुरु जी, कृष्ण भगवान कहते हैं "जब मैं प्रसन्न होता हूँ तो बुद्धियोग देता हूँ" — यह कौन सा बुद्धियोग है? इस लोक का या किसी और का?

**उत्तर:** इसी लोक में देते हैं — इस भवसागर से पार कैसे हो जाओ, वैसी बुद्धि, वैसा ज्ञान देते हैं, जिसे सत्संग और विवेक कहा जाता है। लेकिन विवेक और समझने की क्षमता भी तभी मिलती है जब आप योग्य होते हो, जब आप प्रयास करते हो। जैसे आप बोझा उठाते-उठाते थक जाते हो तो बिना बुलाए कोई आता है "चलो मैं उठवा देता हूँ" — लेकिन कब? जब आप उठा रहे थे और थक गए, तब।

सत्संग: 2024-09-21 · प्रश्नोत्तर P17-0082 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0082/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0082/)

**प्रश्न 25.** गुरु जी, जीवन में सत्संग भी है, ईमानदारी भी है और आत्मचिंतन भी — इसके अलावा कोई और तप भी करना पड़ेगा, तब उपलब्धि होगी?

**उत्तर:** तूने ईमानदारी भी पकड़ी, सत्संग भी पकड़ा, आत्मचिंतन भी — लेकिन सत्कर्म को पकड़ा ही नहीं। पहले वो पकड़, कुछ दिन कर, फिर मिल। ये पकड़ेगी तो पक्का होगा, उपलब्धि इसी जन्म में हो जाएगी; जब वाल्मीकि जैसे, अंगुलिमाल जैसे, कालिदास जैसे महामूर्ख को हो सकता है तो तुझे क्यों नहीं होगा? जरूरतमंद की सेवा करना ही तो तप है — अगर हम किसी गिरे हुए जरूरतमंद को उठा रहे हैं, उसे ले जाने में थक जाते हैं, तो उसमें शरीर का बल खर्च हो रहा है, यही तपस्या है। जैसे बीज में वृक्ष छिपा है, फूल में सुगंध छिपी है — तोड़ोगे तो कुछ नहीं मिलेगा — वैसे ही ईमानदारी, सत्कर्म और सत्संग में तप छिपा हुआ है। ये तीन करेगी तो तप हो जाएगा, तप अलग से करना नहीं पड़ता।

सत्संग: 2026-07-19 · प्रश्नोत्तर P21-0098 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0098/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0098/)

**प्रश्न 26.** गुरु जी, आपके मार्गदर्शन में साधना कैसे करें कि आत्म साक्षात्कार हो जाए?

**उत्तर:** ईमानदारी, सत्कर्म और सत्संग। सत्संग कैसा? अपने आप को सुधारने का सत्संग — कि मैं बिगड़ा हूँ, तो मैं कैसे सुधर जाऊँ। जहां आपके सुधारने की बात हो, वही सत्संग है।

सत्संग: 2026-07-14 · प्रश्नोत्तर P21-0130 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0130/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0130/)

**प्रश्न 27.** गुरु जी, संसार में संग का क्या महत्व है? साधु-संग क्या है? और सत मार्ग और परमार्थ में क्या अंतर है?

**उत्तर:** परमार्थ मतलब दूसरे की सहायता करना। और संग का असर तब पड़ता है जब आप उस पर काम करते हो, उसमें जीते हो। संग में हो लेकिन कुछ और कर रहे हो, तो कोई मतलब नहीं है। उसी घर में एक व्यक्ति बहुत अच्छा सज्जन रहता है, और एक बेटा बहुत दुर्जन बन जाता है — संग के बाद आप करते क्या हो, बात वह है। उसी संग में आदमी बहुत बुरा बन जाता है, उसी संग में आदमी बहुत अच्छा बन जाता है।

सत्संग: 2025-03-09 · प्रश्नोत्तर P23-0110 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0110/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0110/)

**प्रश्न 28.** गुरु जी, गुरु गृहस्थ को बनाएं या विरक्त को? मार्गदर्शन करें।

**उत्तर:** गुरु ज्ञान का प्रतीक होता है; जो आपके प्रश्नों के उत्तर दे दे, वो गुरु योग्य है। गुरु ना गृहस्थ होता है, ना संन्यासी होता है — गुरु स्थिति होता है। वो जहां भी मिल जाए, बना लो। और उसे क्या बनाओगे? वो आपको बनने-बनाने से मुक्त करा देगा — वही गुरु होता है। ना तुम बनने लायक रहोगे, ना बनाने लायक।

सत्संग: 2026-07-06 · प्रश्नोत्तर P24-0035 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0035/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0035/)

**प्रश्न 29.** गुरु जी, सत्संग को बिना सुने जब अकेले यात्रा में बढ़ते हैं तो धीरे-धीरे भटकने क्यों लगते हैं?

**उत्तर:** तो सत्संग सुनते रहो — पहुंचे नहीं हो ना, पहुंचने तक। देखिए, आप अगर किसी मार्ग पर जा रहे हो, आपके पास पता तो है लेकिन पूरे रास्ते तो लिखे नहीं गए हैं। तो जैसे-जैसे आगे जाओगे, कहीं भटको तो किसी से पूछ लो। जब तक लक्ष्य तक नहीं पहुंचो, तब तक भटकने का भय बना रहेगा। इसलिए सत्संग सुनते रहो, आगे बढ़ते रहो।

सत्संग: 2024-08-31 · प्रश्नोत्तर P28-0153 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0153/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0153/)

**प्रश्न 30.** गुरु जी, अर्जुन ने कृष्ण को गुरु बनाया — क्या हम कृष्ण को इष्ट बना सकते हैं?

**उत्तर:** ये आपके ऊपर है। मीरा ने इष्ट ही बनाया। इष्ट बनाया और उनकी कृपा से फिर उन्हें संत रविदास जी मिले; उन्होंने उन्हें गुरु बनाया और संत रविदास जी ने ज्ञान दिया।

सत्संग: 2026-05-30 · प्रश्नोत्तर P29-0020 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0020/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0020/)

## आत्मज्ञान और मुक्ति

**प्रश्न 31.** खोज के दौरान एक संत ने कहा था कि एक करोड़ रुपये में आश्रम हो जाएगा। आपने उस समय मना कर दिया। क्या तब यह पता नहीं चला था कि आगे चलकर अपनों की कुटिया का निर्माण करना है?

**उत्तर:** उस समय मुझे बस इतना पता था कि मुझे आत्मज्ञान के अलावा कुछ नहीं चाहिए। बस इतना पता था, इसलिए मैंने मना कर दिया। मैं उनके साथ भी आत्मज्ञान के लिए चाहता था, एक करोड़ के लिए नहीं। मैं जिससे मिलता हूँ, उसके अलावा कोई बात ही नहीं करता। आत्मज्ञान के अलावा कोई बात ही नहीं करता।

सत्संग: 2026-05-24 · प्रश्नोत्तर P6-0067 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P6-0067/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P6-0067/)

**प्रश्न 32.** भक्ति और आत्मज्ञान में क्या फर्क है?

**उत्तर:** भक्ति के द्वारा व्यक्ति आत्मज्ञान तक पहुंचता है। या तो शब्दों के द्वारा, कोई ज्ञान मार्ग से चल देता है, कोई भक्ति मार्ग से चल देता है। लेकिन मूल यह है कि आत्मज्ञान हो जाए।

सत्संग: 2026-06-05 · प्रश्नोत्तर P9-0045 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P9-0045/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P9-0045/)

**प्रश्न 33.** क्या संसार में रहकर अपने कर्तव्यों को करते हुए आत्मज्ञान प्राप्त किया जा सकता है?

**उत्तर:** अगर आप सुने हुए सत्संग पर चल रहे हो, ईमानदारी, सत्कर्म और सत्संग के साथ जीवन जी रहे हो, और इसके बाद अपने आप को एकांत में भी समय दे रहे हो, तो काम करोगे तो होगा।

सत्संग: 2026-10-16 · प्रश्नोत्तर P10-0107 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0107/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0107/)

**प्रश्न 34.** आपने कहा था कि भगवान भी आत्मज्ञान नहीं करवा सकता। बाकी सब दे सकता है, पर आत्मज्ञान क्यों नहीं?

**उत्तर:** धन, वैभव, समृद्धि सब दिया जा सकता है; आत्मज्ञान कोई किसी को नहीं दे सकता, क्योंकि वह आपके अंदर है, आपमें ही है। बाहर होता तो दे भी देता। उसके लिए आपको अपने अंदर जाना पड़ेगा, और आपके अंदर आपके अलावा कोई नहीं जा सकता। आपने अपने आप को बाहर किया है, और आप ही को वहां से निकालकर अपने आप में लाना है।

सत्संग: 2026-01-11 · प्रश्नोत्तर P11-0189 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P11-0189/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P11-0189/)

**प्रश्न 35.** जो अनुभव समाधि में होता है, क्या आत्मज्ञान में भी वैसा ही अनुभव होता है?

**उत्तर:** आप उसकी यात्रा करिए। मुझे अनुभव से परे उठना है; मुझे अपने आप को किसी अनुभव में नहीं फंसाना है, क्योंकि अनुभव मुझसे अलग है। किसी भी अनुभव के पीछे कोई आधार है, बेस है; तो मुझे अनुभव से भी मुक्त होना है।

सत्संग: 2026-01-04 · प्रश्नोत्तर P12-0062 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0062/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0062/)

**प्रश्न 36.** गुरु जी, लगभग 350 साल बाद हमें अपनी कुलदेवी का पता चला, पूजा-पाठ करते हैं और घर की हालत अच्छी हो रही है — क्या इससे आत्मज्ञान में सहयोग होगा? कुलदेवी तो कुल की रक्षा करती है।

**उत्तर:** आत्मज्ञान में सहयोगी तब होगा जब आप आत्मिक कल्याण के लिए कुछ कर रहे हो। क्या उनकी पूजा-पाठ, वंदना, प्रार्थना आत्मिक कल्याण के लिए कर रहे हो? और क्या वह करने से आत्मिक कल्याण होगा — यह बात आपको पता है? यह देख लीजिए।

सत्संग: 2025-12-21 · प्रश्नोत्तर P17-0200 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0200/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0200/)

**प्रश्न 37.** गुरु जी, हमें आत्मज्ञान हुआ, यह कैसे पता चलेगा?

**उत्तर:** जैसे भोजन करते हो, तो लाने वाले को बाद में, खाने वाले को पहले पता चलता है। आप अज्ञान में हो, यह किसे पता चला? आपको ही पता चलता है — वैसे ही आत्मज्ञान होगा तो आपको ही पता चलेगा।

सत्संग: 2025-01-03 · प्रश्नोत्तर P18-0083 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0083/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0083/)

**प्रश्न 38.** गुरु जी, जो आदमी सच में निकलना चाहता है, उसकी आप कितनी मदद करते हैं? और क्या गुरु के बगैर भी कोई निकल सकता है?

**उत्तर:** पूरी तरह, हर तरीके से। गुरु के बगैर नहीं — गुरु चाहिए ही चाहिए। फंस गया है तो चाहिए। हर हाल में चाहिए ही चाहिए। गुरु शब्द है। शब्दों को काटने के लिए शब्द ही चाहिए। अगर आप इस किनारे से उस किनारे जाना चाहते हो, तो इसी पानी का सहारा लेकर जा सकते हो, और कोई रास्ता नहीं है। वैसे ही इस संसार में गुरु ही आपको मुक्ति से मोक्ष तक का रास्ता दिखा सकता है, और कोई नहीं। गुरु शब्द है, शरीर नहीं। शब्दों को लेकर आगे बढ़ जाओ।

सत्संग: 2026-08-06 · प्रश्नोत्तर P24-0087 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0087/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0087/)

**प्रश्न 39.** गुरु जी, आत्मज्ञान के पहले और बाद में आपने अपने आप में क्या फर्क पाया?

**उत्तर:** फर्क इतना पाया कि आत्मज्ञान के पहले कुछ करना चाह रहा था — कि समाज का हर व्यक्ति उपयोग करे — और आत्मज्ञान के बाद वह हो रहा है। बस इतना फर्क पाया।

सत्संग: 2026-06-14 · प्रश्नोत्तर P27-0049 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0049/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0049/)

**प्रश्न 40.** गुरु जी, क्या अवस्थाएं परमानेंट होती हैं? जैसे प्रकृति, मन और शरीर बदलते हैं, तो जो अवस्था हमने पाई, वह भी तो बदल सकती है?

**उत्तर:** मुक्ति के अलावा कोई दूसरी अवस्था परमानेंट नहीं है, स्थिर नहीं है। मुक्ति ही एक ऐसी अवस्था है जो पाई नहीं जाती — हम अपने मूल में पहुंचे, अवस्था नहीं पाई, पाई हुई अवस्थाओं से मुक्त हुए। और आत्मज्ञान के बाद वह आपके ऊपर है।

सत्संग: 2026-05-30 · प्रश्नोत्तर P28-0026 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0026/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0026/)

## मन, इच्छा और कामना

---

**प्रश्न 41.** गुरु जी, इच्छा तो समझ में आती है, अपेक्षा क्या होती है?

**उत्तर:** अपेक्षा का मतलब — आपने किसी के लिए किया और बिना उससे पूछे अपेक्षा बांध के रख दी कि वह मेरे लिए भी करेगा। नहीं करता है तो दुख होता है। तो अपेक्षा मत करिए, सीधा बातचीत करिए।

सत्संग: 2026-10-16 · प्रश्नोत्तर P10-0094 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0094/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0094/)

**प्रश्न 42.** गुरु जी, मैं राग-द्वेष में बहुत फंस जाता हूँ — उसके लिए क्या करूँ?

**उत्तर:** राग-द्वेष में तब फंसते हो जब आपकी कोई कामना हो। कोई मान की इच्छा, कोई योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा — कोई कामना है तब आप फंसते हो।

सत्संग: 2026-10-08 · प्रश्नोत्तर P13-0078 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0078/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0078/)

**प्रश्न 43.** गुरु जी, संत के पांव छूने से कुछ ऊर्जा मिलती है, फायदा होता है क्या? हम किसी के पांव क्यों स्पर्श करते हैं?

**उत्तर:** जब व्यक्ति के शरीर में बुखार रहेगा, आप कुछ समय के लिए छू दीजिए, उतने अंग में आपके बुखार आ जाएगा — आता है कि नहीं? आप आजमा सकते हो। बर्फ को हाथ में ले लो, फिर छोड़ दो — उतना हाथ ठंडा हो जाएगा। लोहा जलता हुआ लाल हो और हाथ में ले लो, फिर क्या होगा? वही बात है — एनर्जी। जिनका अपने प्रति भाव शुद्ध हो, उनका ही पैर छूना चाहिए। और अगर आप एक गुरु का पांव छू रहे हैं — क्या सच में आपको कुछ नहीं चाहिए? क्या सच में कुछ नहीं चाहिए में गले मिल रहे हैं? तब तो ठीक है। कुछ नहीं चाहिए में छू रहे हो तब तो बहुत अच्छा है, तब तो आपका स्तर उठ जाएगा। लेकिन अगर आप "कुछ चाहिए" में छू रहे हो, फिर आप गिर जाओगे।

सत्संग: 2025-04-20 · प्रश्नोत्तर P13-0192 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0192/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0192/)

**प्रश्न 44.** गुरु जी, पूरी जिंदगी भौतिकवाद में मेहनत करके जो चीजें हासिल कीं, अब उनका उपयोग करना क्या कामना में आएगा?

**उत्तर:** पहले कामना को समझो — योग्यता से ज्यादा चाहिए, वह कामना है; आपकी जरूरतें कामना नहीं। शरीर को भोजन चाहिए, पर भोजन मेरे ही तरीके से चाहिए — वह कामना; शरीर को ठंड-गर्मी में कपड़ा चाहिए, पर मेरे तरीके से चाहिए — वह कामना। जो आपने संघर्ष करके कमाया, अगर बेईमानी से कमाया तो वह कामना में आएगा, ईमानदारी से कमाया तो वह कामना नहीं है। अगर आपका जीवन अशांत है, उथल-पुथल है, तो समझ लो आपने कर्म के प्रति ईमानदारी नहीं, बेईमानी की है। ईमानदारी होती तो वे वस्तुएं और व्यवस्थाएं आपको सुकून और शांति देतीं। जिस दिन गलत काम किया, उस रात बेचैनी होती है, उठने के बाद भी बेचैनी रहती है।

सत्संग: 2024-09-29 · प्रश्नोत्तर P18-0184 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0184/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0184/)

**प्रश्न 45.** गुरु जी, अभी साधक की यात्रा किस चरण में है?

**उत्तर:** अभी तो छुड़ाने की यात्रा चल रही है, स्व तक पहुंचने की भी नहीं। अभी आप बाहर से अपने आप को छुड़ा रहे हो; इस पिंड में भी नहीं आए हो, अनेक वस्तुओं, अनेक पिंडों में अनेक तरीके से फंसे हुए हो — आपको खुद नहीं पता कितना। जब "कुछ नहीं चाहिए" में आओगे, तब स्व की यात्रा होगी।

सत्संग: 2024-12-26 · प्रश्नोत्तर P20-0026 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0026/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0026/)

**प्रश्न 46.** गुरु जी, विचार कैसे रुकें?

**उत्तर:** "कुछ नहीं चाहिए" में आ जाओ। जब कुछ नहीं चाहिए, तो विचार आएं-जाएं, आपसे मतलब ही नहीं; विचार तब परेशान करते हैं जब आपको कुछ चाहिए। कुछ नहीं चाहिए में बैठ गए तो कोई व्यक्ति आपको परेशान नहीं कर सकता।

सत्संग: 2025-07-16 · प्रश्नोत्तर P20-0098 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0098/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0098/)

**प्रश्न 47.** गुरु जी, फकीर किसे कहते हैं, और उस स्थिति में आने के लिए क्या करना होगा?

**उत्तर:** एक फकीर अपने आप को बादशाह सा कह सकता है, उसके पास कुछ भी नहीं है; और एक बादशाह होते हुए अपने आप को फकीर सा कर ले — उसके पास कुछ नहीं है, कुछ नहीं चाहिए — तब वह फकीर है। कुछ नहीं है और कुछ नहीं चाहिए — इस स्थिति में है तो फकीर है। फकीर का मतलब — जिसने अपनी लकीर को मिटा दिया। अगर लकीर है तो फकीर नहीं, वह लकीर का फकीर है। जिसने अपने आप को जन्म-मरण से मुक्त करा लिया, वह है फकीर — ना उसका जन्म रहा ना मरण। इस स्टेटस में आने के लिए बस उम्मीद छोड़ दो, बात खत्म। उम्मीद ही सुख है, उम्मीद ही दुख है — जब आपके तरीके से हुआ तो सुख, नहीं हुआ तो दुख।

सत्संग: 2025-03-05 · प्रश्नोत्तर P22-0010 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0010/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0010/)

**प्रश्न 48.** गुरु जी, आप कहते हैं कुछ नहीं चाहिए में आ जाएं — तो जीवन कैसे कटेगा? आम तौर पर तो शरीर और मन की जरूरत पूरी करते-करते जीवन कट जाता है, बड़े दुख मिलते हैं।

**उत्तर:** आपने जरूरत में जीना चालू किया — सिर्फ जरूरत में — तो वह "कुछ नहीं चाहिए" ही है। आप यह बात क्यों नहीं समझ रहे? जरूरत में जीना चालू कर दिया, सिर्फ जरूरत में, तो वही कुछ नहीं चाहिए है — उसी में तो आप होते हो, उसी में तो आना है, उसी में ज्ञान है।

सत्संग: 2025-03-09 · प्रश्नोत्तर P23-0118 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0118/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0118/)

**प्रश्न 49.** गुरु जी, जब सब में मैं ही हूँ, तो हो सकता है वह खुद का खुद ही सुन रहा हो, खुद ही सुना रहा हो?

**उत्तर:** जरूरत क्या है? जरूरत क्यों पड़ रही है? जरूरत के पीछे कामना है। हम एक-दूसरे से तभी बात करते हैं जब कुछ चाहिए; बिना मतलब के कोई नहीं बोलेगा। बात करने के लिए कोई अलग चाहिए, विपरीत कोई होगा तभी बात होगी; सब एक जैसे हैं तो कौन सुनने वाला रहेगा, कौन सुनाने वाला। अपने आप में जैसे ही आप हो जाओगे, आपके प्रश्न खत्म हो जाएंगे, उत्तर हो जाएंगे — बाहरी रास्ता, यह गांव आगे कहां पड़ेगा, वह पूछ सकते हो, लेकिन आंतरिक यात्रा का किसी से पूछ ही नहीं पाओगे, क्योंकि उसका पता चल ही गया। तो जांचो अपने आप को कि मेरी स्थिति क्या है — किसी की स्थिति का निर्णय कोई और नहीं कर सकता।

सत्संग: 2024-08-01 · प्रश्नोत्तर P24-0003 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0003/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0003/)

**प्रश्न 50.** गुरु जी, तृष्णा से मुक्त जीवन के लिए क्या करें?

**उत्तर:** तृष्णा मतलब प्यास। जैसे रेत में गर्मी से भाप निकलती है, तो हिरण को लगता है पानी की लहर है, पीने के लिए भागता है, लेकिन वहां कुछ नहीं मिलता और प्यास बढ़ जाती है — वही मृग तृष्णा है। इससे छूटने का एक ही उपाय है: "कुछ नहीं चाहिए" में आ जाओ।

सत्संग: 2026-05-30 · प्रश्नोत्तर P29-0006 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0006/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0006/)

## डर, दुख और उम्मीद

---

**प्रश्न 51.** जरूरत से ज्यादा डरने वाले लोगों के लिए क्या?

**उत्तर:** जरूरत से ज्यादा चाहिए, योग्यता से ज्यादा चाहिए, तो राग-द्वेष पैदा होगा। बस इतनी सी बात है। राग-द्वेष में फंस जाओगे। और जितनी योग्यता है, उसमें राग-द्वेष पैदा होगा ही नहीं। ऐसे दुकानदार के पास एक व्यक्ति गया, सामान लिया, कम पैसा था, तो राग-द्वेष पैदा होगा। दिया तो भी राग, नहीं दिया तो द्वेष। और जितना पैसा था, उतना का सामान लेके आ गए, तो राग-द्वेष नहीं होगा।

सत्संग: 2025-04-18 · प्रश्नोत्तर P5-0046 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P5-0046/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P5-0046/)

**प्रश्न 52.** दुख को कैसे सुलझाएं? दुख से मुक्ति कब और कैसे होगी?

**उत्तर:** दुख का मतलब यह है कि वैसा कर्म किया है। सुख कहीं भोगा है, वही दुख बन गया है। सुख की कामना छोड़ दो। और जितना दुख मिला है, उसे भोग लो। भोगना पड़ेगा।

सत्संग: 2026-06-07 · प्रश्नोत्तर P6-0110 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P6-0110/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P6-0110/)

**प्रश्न 53.** जिससे हम मुक्त होने वाले होते हैं, क्या वह अंत में पीड़ा देता है — चाहे कोई वस्तु हो, व्यक्ति हो, मन हो या शरीर? क्या यह बात ठीक है या मेरा भ्रम है?

**उत्तर:** आप अगर उससे उम्मीद लगाकर बैठे हो, तो कभी ना कभी वह आपको पीड़ा देगा। पहले सुख देगा, आपके तरीके से पूरा होगा; लेकिन पीड़ा के लिए भी तैयार रहिए — वह एक ना एक दिन पीड़ा देगा ही देगा।

सत्संग: 2026-01-04 · प्रश्नोत्तर P12-0035 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0035/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0035/)

**प्रश्न 54.** गुरु जी, मैंने किसी से उम्मीद लगा रखी है — किससे है, किस प्रकार की है, मैं नहीं समझ पा रहा; कैसे जानूं?

**उत्तर:** ये आप ही को देखना है — क्या उम्मीद बना के बैठी हो। उम्मीद ही दुख है; उम्मीद ही सुख है — कब? जब उम्मीद हमारे तरीके से पूरा हो जाता है तो सुख, नहीं होता है तो दुख। उम्मीद छोड़।

सत्संग: 2025-07-08 · प्रश्नोत्तर P13-0088 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0088/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0088/)

**प्रश्न 55.** गुरु जी, इतना घना जंगल है, आपको डर नहीं लगता?

**उत्तर:** डर का तो सवाल ही नहीं है, मैं कभी सोचता भी नहीं। मेरे जीवन में डर की बात नहीं है, बस मैं काम करता हूं। डर क्यों लगेगा? जब काम कर रहे हैं तो डरना क्यों? जंगल में मंगल हो चुका है। अब तो साधक लोग भी आके रह रहे हैं, उन्हें भी कहां डर है? डरना है तो अपने बुरे कर्मों से डरो, बेईमानी से डरो — वो मत करो। डरना ही है तो बुरे कर्मों से डरो।

सत्संग: 2026-10-17 · प्रश्नोत्तर P13-0099 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0099/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0099/)

**प्रश्न 56.** गुरु जी, जहां सारी बातें प्रैक्टिकल करके समझाई जाती हैं, ऐसी जगह भीड़ कम क्यों रहती है? आखिर लोगों को क्या डर है?

**उत्तर:** आपके जीवन में, परिवार-रिश्तेदारों में कितने लोग मिले जो ज्ञान के लिए गुरु खोज रहे हैं, व्याकुल हैं? कोई नहीं — तो भीड़ कहां से रहेगी? जहां सत्य बंट रहा है, वहां भीड़ कहां से रहेगी; जहां ढोंग बंट रहा है, वहां लाखों लोग हैं, क्योंकि सबको जरूरत से ज्यादा, योग्यता से ज्यादा चाहिए, घुमा-फिरा के नाम, शोहरत, पैसा चाहिए। इस ज्ञान से जीवन समझ में आ जाता है, जीवन का उद्देश्य, जीवन का मतलब समझ में आ जाता है — बुराइयां छूट जाती हैं, बेईमानी छूट जाती है; छोड़ने से डर रहा है।

सत्संग: 2026-03-06 · प्रश्नोत्तर P14-0071 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P14-0071/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P14-0071/)

**प्रश्न 57.** गुरु जी, ध्यान करते वक्त मन में परेशानी और घबराहट होती है — मन इतने विचार क्यों देता है, और स्थिरता कैसे बने?

**उत्तर:** विचार वही आते हैं जो आपने अतीत में कर्म किए हैं — विचारों का आधार है, ऐसे ही विचार नहीं आते। स्थिरता के लिए बस इच्छा और अपेक्षा से अपने आप को मुक्त कराइए — सीधी सी बात है, उम्मीद छोड़ दो, बात खत्म।

सत्संग: 2025-01-03 · प्रश्नोत्तर P18-0094 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0094/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0094/)

**प्रश्न 58.** गुरु जी, उम्मीद से कैसे मुक्त हुआ जाए? आत्मज्ञान भी तो एक उम्मीद है।

**उत्तर:** उम्मीद का मतलब — बाहर के किसी के द्वारा उम्मीद। आत्मज्ञान तो स्वयं की स्थिति है। उम्मीद कहां है? सारी उम्मीदों से जब आप मुक्त होंगे, तो आपको आत्मज्ञान होगा। तो यह उम्मीद नहीं है।

सत्संग: 2026-10-19 · प्रश्नोत्तर P23-0137 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0137/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0137/)

**प्रश्न 59.** गुरु जी, डर को जड़-मूल से कैसे खत्म करें?

**उत्तर:** इच्छा है तो डर है, डर है तो इच्छा है। इच्छा-अपेक्षा खत्म होगी तो ही डर खत्म होगा। और जब तक इच्छा-अपेक्षा है, तब तक डर कभी खत्म ही नहीं होगा।

सत्संग: 2026-10-27 · प्रश्नोत्तर P25-0080 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P25-0080/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P25-0080/)

**प्रश्न 60.** गुरु जी, हर समय डर लगा रहता है। क्या करूं?

**उत्तर:** डर तभी है जब कोई कामना है, कोई इच्छा है और आप कहीं ना कहीं से कमजोर हो, उसे पूरा नहीं कर पा रहे हो। या तो जिसके द्वारा पूरा कर रहे हो, वह इधर-उधर कर रहा है, तो डर बना रहेगा। डर को हटाने के लिए सामर्थ्यवान बनाएं अपने आप को।

सत्संग: 2026-10-29 · प्रश्नोत्तर P26-0019 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0019/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0019/)

## परिवार और गृहस्थ जीवन

---

**प्रश्न 61.** योगी जी, वैवाहिक स्त्रियां चाहकर भी अपने लिए वक्त नहीं निकाल पातीं। उनके लिए इस मार्ग में टिके रहने के लिए क्या-क्या जरूरी है?

**उत्तर:** अपनों की कुटिया में एक महीने के लिए आप लोग आ सकते हो। आप लोगों के लिए यहां व्यवस्था है। एक-एक महीने की छुट्टी मांगो अपने परिवार से। आप ग्यारह महीने परिवार को दो। एक महीने अपने आप को दो।

सत्संग: 2026-08-10 · प्रश्नोत्तर P10-0023 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0023/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0023/)

**प्रश्न 62.** महाराज जी, मैं सबके प्रति पॉजिटिव रहती हूँ, परंतु परिवार में कुछ लोग मेरे प्रति नेगेटिव क्यों हैं, जबकि मैं निष्काम भाव से सेवा करती हूँ?

**उत्तर:** कोई बात नहीं है। कांटा चुभने के लिए ही पैदा हुआ है। कितनी भी सेवा करोगे, चुभेगा। तो आप सेवा करिए; अगर चुभे तो बचा लीजिए, बस चुभने मत दीजिए। उसका स्वभाव है चुभना — उससे दूर रहना। बस।

सत्संग: 2025-06-25 · प्रश्नोत्तर P13-0165 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0165/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0165/)

**प्रश्न 63.** गुरु जी, आप कहते हैं जो पाया है वह छोड़ दो — पर गृहस्थ जीवन में तो सब चाहिए, फिर क्या छोड़ें? और "चाहिए" वाले ध्यान से मुक्त हो गए तो दैनिक कार्य कैसे करेंगे?

**उत्तर:** योग्यता से ज्यादा जो चाहिए, बस वह छोड़ दो — इतना तो आप करो। जीने के लिए जो जरूरत है उसमें जियो; जरूरत से ज्यादा "चाहिए" का त्याग करो।

सत्संग: 2025-01-03 · प्रश्नोत्तर P18-0095 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0095/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0095/)

**प्रश्न 64.** गुरु जी, परिवार में कोई बार-बार समझाने पर भी न समझे तो हमारा कर्तव्य क्या है, और कब उसका त्याग कर देना चाहिए?

**उत्तर:** हमारे साथ कोई रह रहा है तो हमारा कर्तव्य है कि ऐसे शब्दों का प्रयोग करें जिससे वह समझ जाए। व्यक्ति की दो स्थिति होती है: एक, समझते हुए भी समझना नहीं चाहता, उसे गलत ही करना है — ऐसे व्यक्ति का त्याग ही परम सुख है। दूसरी, समझना चाहता है पर समझ नहीं पा रहा — उसे हर तरीके से समझाना परम दायित्व है, दंड-भेद-नीति कुछ भी अपनाना पड़े। पर पहले देखो कि उसमें उसका हित है, मैं अपना स्वार्थ या अहंकार तो पूरा नहीं कर रहा। पूरा देने के बाद भी न समझे, तो त्याग कर दो — जैसे श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को बहुत समझाया, नहीं समझा तो छोड़ दिया।

सत्संग: 2025-07-16 · प्रश्नोत्तर P20-0076 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0076/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0076/)

**प्रश्न 65.** गुरु जी, एक लड़का है जो माता-पिता की बात नहीं समझता, उसके लिए क्या करें?

**उत्तर:** अब उसके लिए कहना क्या — हो सकता है माता-पिता वह कह रहे हैं जिसकी सामर्थ्य उसमें नहीं है, या माता-पिता जो कह रहे हैं वह उसको समझ में नहीं आ रहा है। तो उसको बैठकर बात करना पड़ेगा। बात करिए।

सत्संग: 2026-10-29 · प्रश्नोत्तर P26-0042 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0042/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0042/)

**प्रश्न 66.** गुरु जी, हम घर पर रहते हैं, तो किस प्रकार आत्मज्ञान की प्रक्रिया को साथ लेकर चल सकें?

**उत्तर:** ईमानदारी और सत्कर्म। जब भी आप कमा रहे हैं, आपकी इनकम ईमानदारी की हो; भूखे को भोजन, प्यासे को पानी; आंतरिक ईमानदारी, मेहनत, और मेरे कर्म से किसी को तकलीफ ना हो — इसका विशेष ध्यान रखते हुए आगे बढ़ो।

सत्संग: 2024-12-31 · प्रश्नोत्तर P26-0107 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0107/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0107/)

**प्रश्न 67.** गुरु जी, गृहस्थ जीवन का रास्ता आत्मज्ञान के लिए उत्तम क्यों है? आपने इसे साधना से भी उत्तम बताया है — मैं एक गृहस्थ हूँ, कृपया मार्गदर्शन कीजिए।

**उत्तर:** इसलिए कि आप काम करते हुए, आराम से ईमानदारी से जीवन जीते हुए, सत्कर्म अपनाते हुए अपने परिवार के साथ रहकर आत्मज्ञान तक उपलब्ध हो सकते हैं। एक संन्यासी के लिए यह इतना जटिल है — वह काम नहीं कर सकता क्योंकि उसे जल्दी आत्मज्ञान चाहिए; एक वक्त की रोटी कोई खिलाए तो उसके बदले उसे उपाय बताने पड़ते हैं — कमर में पीड़ा है, लड़की का ब्याह नहीं हो रहा — और कोई नहीं पूछता कि जिसके लिए निकले थे वह उपलब्धि हुई या नहीं। और जहां व्यवस्था है वहां साधना के लिए एकांत नहीं मिलता। यह मेरा व्यक्तिगत भुक्त-भोगी अनुभव है। इसलिए साधक का जीवन बहुत जटिल है, और गृहस्थ में रहकर मैं आपको बता दूँ — बहुत आसान है। प्रत्यक्ष ज्ञान के माध्यम से अब तो मार्ग एकदम आसान है।

सत्संग: 2026-06-14 · प्रश्नोत्तर P27-0034 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0034/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0034/)

**प्रश्न 68.** गुरु जी, गृहस्थ में रहकर भी उसे पाया जा सकता है क्या?

**उत्तर:** कहीं भी — मूल यह है कि कहीं भी रहो, बेईमानी-दुष्कर्म का त्याग करो, ईमानदारी-सत्कर्म अपना लो। दुनिया में कहीं भी रहो, आपकी उपलब्धि हो जाएगी। सीधी सी बात है, साफ-सुथरी।

सत्संग: 2025-03-12 · प्रश्नोत्तर P27-0140 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0140/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0140/)

**प्रश्न 69.** गुरु जी, अगर घर के लोग सत्कर्म करने से रोकें तो हम उन्हें कैसे मनाएं?

**उत्तर:** परिवार को मनाने की जरूरत नहीं है, सत्कर्म करते रहो। सब काम छोड़कर भोजन, और भोजन छोड़कर आत्मिक कल्याण — और आत्मिक कल्याण होगा सत्कर्म से। तो सत्कर्म करो, आगे बढ़ो।

सत्संग: 2024-08-31 · प्रश्नोत्तर P28-0129 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0129/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0129/)

**प्रश्न 70.** गुरु जी, गृहस्थ जीवन में किस ब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है?

**उत्तर:** ब्रह्म आपको प्राप्त कर लेगा। ब्रह्म आप प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि आप छोटे हो, वो बड़ा है, और छोटे पात्र में बड़ा पात्र कभी नहीं आता — छोटे पात्र को बड़े पात्र में जाना पड़ता है। इसलिए ईमानदारी, सत्कर्म जीवन में अपना लो। जब समय आएगा, जिस दिन आप पवित्र हो जाएंगे, वो आपको प्राप्त कर लेगा।

सत्संग: 2026-05-30 · प्रश्नोत्तर P29-0008 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0008/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P29-0008/)

## पैसा, नौकरी और काम-धंधा

---

**प्रश्न 71.** गुरु जी, सत्कर्म करने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है। तो मेरा भाव बनता है कि मैं वर्तमान नौकरी छोड़कर ज्यादा पैसे वाली नौकरी की तैयारी करूं, जिससे मुझसे और ज्यादा सत्कर्म होगा। क्या यह सही है?

**उत्तर:** हां, लेकिन बस वो नौकरी ईमानदारी की हो। ईमानदारी के कमाए हुए धन से सत्कर्म करो।

सत्संग: 2026-03-01 · प्रश्नोत्तर P4-0010 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P4-0010/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P4-0010/)

**प्रश्न 72.** जो पैसे हम कमाते हैं, क्या उसमें "मेरा" का भाव नहीं आना चाहिए? वह मैं कैसे दूर करूं?

**उत्तर:** पैसा आप कमाते हो तो "मेरा" का भाव तो आएगा। बस उस "मेरा" का सही जगह उपयोग करो — ईमानदारी से पैसा कमाओ, और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के बाद सत्कर्म में लगाओ।

सत्संग: 2026-01-04 · प्रश्नोत्तर P12-0077 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0077/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P12-0077/)

**प्रश्न 73.** गुरु जी, सब सामान तो पैसे से मिलता है — तो खाली कैसे करें?

**उत्तर:** खाली करने के लिए योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग करो; मान की इच्छा, दिखावा, बड़ा-छोटा बनने की इच्छा और राग-द्वेष छोड़ दो।

सत्संग: 2025-12-21 · प्रश्नोत्तर P17-0162 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0162/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0162/)

**प्रश्न 74.** गुरु जी, जब हम गलत करते हैं तो अंदर टीस क्यों उठती है? क्या अंतरात्मा रोकती है?

**उत्तर:** जब-जब आप गलत करने जाते हो, अंतरात्मा रोकती है — तुरंत अंदर से हिंट आता है "मत करो", और आप कहते हो "बच जाएंगे"। अगर यह टीस न होती तो सजा भी नहीं मिलती — पागल को या एक साल के अबोध बालक को कोई सजा नहीं, पर 20-40 साल का समझदार वही करे तो सजा मिलती है। आपने हर बार लालच और कामनाओं में आकर उसे दबाया है — जीवन जीने या पेट भरने के लिए नहीं, सोसाइटी मेंटेन करने के लिए: पकवान, एसी, लग्जरी कार, ब्रांडेड कपड़े चाहिए। जीवन जीने के लिए कोई भ्रष्ट नहीं होता; सोसाइटी आगे हो गई और जीवन पीछे। बचाने के आश्वासन देने वाले बैठे हैं — "यह उपाय कर लो, छूट जाओगे" — पर जिनके नाम से आश्वासन दे रहे वे खुद भोग के गए। अंतरात्मा ने मना किया फिर भी किया, तो करो तो भोगो।

सत्संग: 2024-09-29 · प्रश्नोत्तर P18-0190 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0190/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0190/)

**प्रश्न 75.** गुरु जी, पश्चिम केवल कर्म करके अमीर है पर वहां परिवार और शांति नहीं, और यहां केवल नाम-जप में गरीबी आ रही है — बीच का रास्ता क्या है?

**उत्तर:** सीधी सी बात — पैसा चाहिए तो काम करो, शांति चाहिए तो माला जपो; देख लो आपको क्या चाहिए। दोनों चाहिए तो बीच का रास्ता है: ईमानदारी से काम करते हुए सत्कर्म करो। ईमानदारी, सत्कर्म और मेहनत — सब मिल जाएगा, शांति भी। न पूर्व जाओ, न पश्चिम, एकदम सीधा। धर्म भी तभी समझ में आएगा जब पेट में रोटी होगी।

सत्संग: 2024-12-26 · प्रश्नोत्तर P20-0049 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0049/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0049/)

**प्रश्न 76.** नौकरी में लोग चापलूसी और टांग खींचकर गिराने की कोशिश करते हैं, मुझे चापलूसी पसंद नहीं, पर नौकरी जाने का खतरा रहता है — क्या करूं?

**उत्तर:** नौकरी जाए तो जाए, दूसरी मिलेगी — आपको ईमानदारी से जीना है, समझौता नहीं करना है, सीधी सी बात है। समझौता करोगे तो गिर जाओगे। विपरीत परिस्थितियों में ही आपकी ईमानदारी का पता चलता है; अनुकूल परिस्थितियां रहें तो कैसे पता चलेगा? टांग खींचेंगे तभी आपकी ताकत का पता चलेगा। जैसे ही आप ईमानदार होंगे, आपकी परीक्षा चालू हो जाएगी — सत्संग में जो सुना, वैसे ही जिंदगी जीओ, चाहे कुछ भी हो जाए।

सत्संग: 2025-09-02 · प्रश्नोत्तर P20-0111 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0111/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0111/)

**प्रश्न 77.** गुरु जी, जैसे हम कहीं जॉब करते हैं तो लगता है कि हम उनका काम कर रहे हैं, तो समय आने पर वो भी हमारा काम करेंगे — क्या यह ठीक है?

**उत्तर:** आप जहां भी काम कर रहे हो, जिस पोस्ट पर हो, जिस पद पर हो, वो उस पद का काम है — ना तो उसका काम है, ना तुम्हारा। भले वो मालिक है, लेकिन उसको भी किसी को जवाब देना है; यहां काम व्यक्तिगत किसी का नहीं है, यहां सब जरूरत के काम कर रहे हैं। तो काम को काम के तरीके से करो। अगर मालिक भी आ जाए तो भी काम के तरीके से करो, मालिक के सामने भी खड़े हो जाओ — क्योंकि मालिक भी कभी-कभी कहता है बेईमानी करो; बोलो हम बेईमानी नहीं करेंगे, हम काम को काम के तरीके से करेंगे, ना कि आपके तरीके से, ना अपने तरीके से। यहां हर पद का काम है, सिस्टम है — तो सिस्टम में चलो।

सत्संग: 2026-07-19 · प्रश्नोत्तर P21-0093 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0093/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0093/)

**प्रश्न 78.** गुरु जी, कई बार दिन-रात मेहनत करने के बाद भी परिणाम नहीं आता, तब क्या करें?

**उत्तर:** परिणाम क्यों नहीं आएगा? मेहनत करें और परिणाम ना आए — ऐसा हो नहीं सकता। मेहनत की हो तो सामने वाले से लड़ जाओगे; और पता चला ऐसे ही कर दिया, तो लड़ोगे किससे? मेहनत करेंगे तो परिणाम आएगा।

सत्संग: 2026-10-23 · प्रश्नोत्तर P24-0127 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0127/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0127/)

**प्रश्न 79.** अगर बढ़ा-चढ़ाकर काम दिखाकर प्रमोशन हो जाए, जो कि बेईमानी हुई, मगर प्रमोशन के बाद ईमानदारी से काम किया जाए, तो क्या वो ठीक है?

**उत्तर:** ईमानदारी से ही शुरुआत करो ना। बेईमानी क्यों कर रहे हो? कहीं झूठ बोलना पड़ रहा है, आपकी योग्यता ज्यादा दिखानी पड़ रही है, बायोडाटा गलत बना रहे हो, मार्केट का एक्सपीरियंस गलत दे रहे हो — तब तो ये कमाई पूरी बेईमानी हो जाएगी, सारी जिंदगी के लिए। आप गलत मत दीजिए, जैसे आप हैं वही बता के उस पद पे जाइए। अगर आपने शुरुआत ही गलत किया है, तो आप फिर कितनी भी ईमानदारी करें, आपकी ईमानदारी का क्या मतलब? बेसिक गलत — आपने पद पाने में ही छल किया।

सत्संग: 2026-06-15 · प्रश्नोत्तर P25-0179 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P25-0179/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P25-0179/)

**प्रश्न 80.** गुरुदेव, तबीयत खराब होने के कारण पांच-छह हजार की सैलरी रहेगी। तो उसमें से पिता श्री का सहयोग करें, अथवा आधा आश्रम में भी दें?

**उत्तर:** आप पहले अपनी जरूरत, अपना दायित्व, अपनी जिम्मेदारी निभाइए। उसे निभाते हुए अगर उसमें से कुछ बचता है, तब उस दान का, उस सेवा का महत्व है; नहीं तो नहीं।

सत्संग: 2026-10-29 · प्रश्नोत्तर P26-0049 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0049/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P26-0049/)

## साधना और एकांत

---

**प्रश्न 81.** गुरु जी, उठते-बैठते, सोते-जागते, काम में, सुख और दुख में — सबसे ऊंची स्थिति क्या है?

**उत्तर:** बस किसी में लिप्त न होना। निर्लिप्त होकर काम करना। चाहे सुख हो चाहे दुख हो, अपने आप को देखना। उस सुख में लिप्त नहीं होना, उस दुख में लिप्त नहीं होना।

सत्संग: 2026-10-12 · प्रश्नोत्तर P1-0092 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P1-0092/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P1-0092/)

**प्रश्न 82.** अगर किसी ने ऐसे कर्म किए हों जिनकी सजा से वह बच गया और अब उसे याद भी नहीं था, पर एकांत में बैठकर सब याद आ रहे हैं — तो वह उन कर्मों से कैसे बचे? क्या सत्कर्म करे?

**उत्तर:** बच नहीं सकता; प्रकृति किसी ना किसी तरीके से (हिसाब करेगी)। पश्चाताप की आग लगेगी — पश्चाताप भी एक भोग है; आत्मग्लानि, घुटन, बेचैनी — वह भी एक सजा है, और सबसे तगड़ी सजा है। अगर पश्चाताप की आग लगी रही और कहीं रसपान नहीं किया, तो जल्दी से जल्दी वह खत्म हो जाएगा। अगर कहीं रसपान कर लिया, अपने आप को लुभावनी चीजों में फंसा लिया, तो वह आग बुझ गई।

सत्संग: 2026-01-18 · प्रश्नोत्तर P11-0054 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P11-0054/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P11-0054/)

**प्रश्न 83.** साधना करने वाले व्यक्ति का दिनचर्या कैसा होना चाहिए, और उसका खान-पान व रहन-सहन कैसा होना चाहिए?

**उत्तर:** किसी भी फील्ड में हो, कुछ भी कर रहे हो — जिस फील्ड में हो, जो सीखना चाहते हो, उसके अलावा कोई बात मत करो। अपना खान-पान अपने शरीर के हिसाब से करो; सबको सब सूट नहीं करता — आप देखो आपके शरीर के लिए क्या उपयोगी है। जिस फील्ड में हो उस फील्ड की बातें करो और सिखाने वाले से बात करो। साधना का मतलब सीधा है — कुछ सीखना, कुछ समझना; यही साधना है। सीखोगे तभी जब समझोगे। पहले पक्का कर लो क्या सीखना है; यही पक्का नहीं हो पाता — कभी ये कभी वो, इसी में घूमते रहते हैं।

सत्संग: 2025-07-27 · प्रश्नोत्तर P13-0081 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0081/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0081/)

#### **प्रश्न 84.** गुरु जी, साधक की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए?

**उत्तर:** चाहे जैसे भी हो, आंतरिक ईमानदारी, मेहनत और "मेरे कर्म से किसी को तकलीफ ना हो" — इस बात का ध्यान रखते हुए जीवन में आगे बढ़ो, और सत्कर्म में अपने आप को लगा दो — भूखे को भोजन, प्यासे को पानी — बिना ये देखे कि वो इस लायक है या नहीं। सेवा में अपने आप को लगाओ — यही साधना है।

सत्संग: 2024-09-04 · प्रश्नोत्तर P17-0030 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0030/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P17-0030/)

#### **प्रश्न 85.** तो क्या बाहर निकलना ही पड़ेगा — बिना एकांत के बात नहीं बनेगी?

**उत्तर:** निकलना ही पड़ेगा — चाहे गुरु ढूंढने, चाहे गुरु के सानिध्य में, चाहे एकांत में कहीं रहने। एकांत में ही आत्मिक चिंतन होगा, भीड़ में थोड़ी होगा। विद्यार्थी भी एकांत कमरे में जाकर पढ़ता है; जहां सब बातचीत कर रहे हों, वहां पढ़ पाएगा? जब कुछ सीखना है तो सब माहौल छोड़कर एकांत में जाना ही पड़ेगा — एकांत जीवन में बहुत जरूरी है।

सत्संग: 2026-01-27 · प्रश्नोत्तर P21-0030 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0030/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P21-0030/)

#### **प्रश्न 86.** गुरु जी, चुप रहने से क्या लाभ है? साधना में इस पर प्रकाश डालें।

**उत्तर:** चुप रहने का मतलब है आप अपने काम की बात करिए, बेमतलब की बातें करना बंद कर दीजिए। आप बेमतलब की बात कर रहे हैं जिसका आपके जीवन में मतलब ही नहीं है — वे बातें करना बंद कर दीजिए और अपने काम की बातें करिए। उससे लाभ होगा।

सत्संग: 2025-04-20 · प्रश्नोत्तर P22-0090 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0090/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P22-0090/)

#### **प्रश्न 87.** गुरु जी, एकांत में खान-पान का भी विशेष ध्यान देना पड़ता है क्या? क्या पेट भर भोजन नहीं करना चाहिए?

**उत्तर:** खानपान तो बहुत मूल है। पेट भर, जितने में शरीर चल जाए, उससे ज्यादा ना खाओ, क्योंकि एकांत में मेहनत तो कर नहीं रहे हो। जितना समय आप रह रहे हैं, बस उतना खाइए जितने में आप जी सकें। ज्यादातर ऊर्जा को तो हम भोजन पचाने में खर्च कर देते हैं। भोजन का बहुत महत्व है — भोजन आप उतना करिए जितने में आपका शरीर चल सके; अत्यधिक भोजन नहीं करना चाहिए। हो सके तो जब तक एकांत में रहो, पेट भर भोजन ना करो, नहीं तो आलस्य रहेगा। शरीर को भोजन पचाने में सबसे ज्यादा ऊर्जा खर्च होती है। कम खाने वाले व्यक्ति को आप स्वस्थ पाओगे, देख लेना; ज्यादा खाने वाले व्यक्ति अस्वस्थ रहते हैं।

सत्संग: 2025-03-07 · प्रश्नोत्तर P23-0050 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0050/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P23-0050/)

### प्रश्न 88. गुरु जी, आत्मचिंतन कैसे किया जाता है?

**उत्तर:** आप कहीं भी एकांत में बैठ जाइए — कि कैसे मैं अपने आप को निकाल लूं? कैसे उस परम स्थिति को उपलब्ध हो जाऊं? राग, द्वेष, मोह, इच्छा, अपेक्षा, मेरा और कर्ता के भाव से मैं कैसे अपने आप को निकाल लूं? यह निकलने का भाव बनाना ही आत्मचिंतन है — मतलब मैं अपनी आत्मा को इस दलदल से कैसे छुड़ा लूं।

सत्संग: 2026-10-24 · प्रश्नोत्तर P24-0140 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0140/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P24-0140/)

### प्रश्न 89. गुरु जी, एक दिन की साधना कैसे करें, कैसे रहना है, बताइए।

**उत्तर:** उस दिन कोई काम मत करिए, सारी व्यवस्थाओं को छोड़ दीजिए — मोबाइल वगैरह सब। लोगों से बोल दीजिए कोई बातचीत नहीं, किसी से व्यवहारिक बात नहीं करनी। पानी पीकर रहिए, या हल्का आहार ले लीजिए। दिन भर बैठ के चिंतन-मनन करिए — सोके नहीं, लेट के नहीं। अपने आप को धोखा ना देना कि दिन भर लेटे रहे और बोले मैं चिंतन कर रहा हूं; लेट के चिंतन नहीं होगा, आराम होगा। आठ घंटे से ज्यादा नहीं लेटना है, और पूरी तरह अपने आप में रहना है।

सत्संग: 2024-08-31 · प्रश्नोत्तर P28-0127 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0127/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0127/)

### प्रश्न 90. गुरु जी, पारिवारिक-सामाजिक दायित्वों को आत्मज्ञान के लिए त्याग करने में कोई दोष होता है, या आत्म कल्याण ही मानव जीवन का मूल लक्ष्य है?

**उत्तर:** मानव जीवन का मूल लक्ष्य तो आत्म कल्याण है, यह पक्का है, लेकिन इसके पीछे जो दायित्व, कर्तव्य मिला है, उसे सोच समझ के आगे बढ़िए। आप ग्यारह महीने समाज के लिए, परिवार के लिए काम करके एक महीना तो अपने लिए निकाल ही सकते हो। एक महीने में जो सीखते हो, घर जाकर आराम से उसमें जीके साधना करो। लोग एक-एक, दो-दो दिन भी रहके गए, उन्होंने भी कुछ सीखा।

सत्संग: 2024-08-31 · प्रश्नोत्तर P28-0139 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0139/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P28-0139/)

## अपनों की कुटिया

---

**प्रश्न 91.** जब आप कुटिया में रहने वाले व्यक्ति के किसी कार्य की सलाहना करते हो या उसकी कोई गलती बताते हो, तो क्या उस व्यक्ति के भीतर उस गुण के साथ अहम भाव खड़े होने की संभावना हो सकती है? इससे वह कैसे उभरे?

**उत्तर:** देखिए, संभावना तब होती जब सामने वाले को कुछ चाहिए होता — कि उसकी बड़ाई करके उसका उपयोग करता — तब जाके। और अगर गुरु कुछ बात कह रहा है, तो गुरु के सामने तो अहम काम ही नहीं कर सकता। जैसे शेर के सामने गीदड़ को रख दो, तो गीदड़ की क्या ताकत काम करेगी? नहीं करेगी ना। एकदम दुबक जाएगा, या तो बच के भाग जाएगा — दो में से एक; अगर भाग नहीं पाएगा तो दुबक के बैठ जाएगा। तो ऐसे गुरु के सामने अहम काम ही नहीं करता, एकदम नहीं करता।

सत्संग: 2026-01-25 · प्रश्नोत्तर P4-0086 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P4-0086/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P4-0086/)

**प्रश्न 92.** वहां कितने समय तक रहना है? क्या एक महीने के लिए कोई आए और फिर घर चले जाए?

**उत्तर:** आ सकते हो। यहां आप आओ तो कम से कम सात दिन रहना है, और ज्यादा से ज्यादा आजीवन भी रह सकते हो। एक महीना, एक साल, पूरी आजीवन रह सकते हो। सात दिन पक्का रहना ही पड़ेगा।

सत्संग: 2026-08-10 · प्रश्नोत्तर P10-0062 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0062/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P10-0062/)

**प्रश्न 93.** आपकी कुटिया में आजीवन रहने के लिए क्या केवल एक नियम में ढील मिल सकती है?

**उत्तर:** किसी को भी नहीं मिल सकती। नियम सिर्फ नियम है, और उस नियम में ही आपकी उन्नति हो सकती है। जैसे किसी बीज को पृथ्वी में डालो और पांच तत्वों में से एक तत्व निकाल दो, तो वह वृक्ष बन ही नहीं सकता।

सत्संग: 2026-01-11 · प्रश्नोत्तर P11-0145 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P11-0145/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P11-0145/)

**प्रश्न 94.** गुरु जी, अपनों की कुटिया में आने पर क्या काम करना पड़ता है?

**उत्तर:** देखिए, वहां किसी के लिए व्यक्तिगत काम नहीं करना पड़ता है। अपनों की कुटिया में आने के बाद शुरू में एक दिन से सात दिन रहना अनिवार्य है; 7 दिन के ऊपर आप आजीवन भी रह सकते हैं। अपनों की कुटिया में पेड़-पौधे लगे हैं — इन पेड़-पौधों को पानी देना पड़ सकता है, घास निकालना पड़ सकता है। और जहां आप रहते हैं, उसकी साफ-सफाई आप ही को करनी है। बस यही काम है। खुद बनाकर खाना है — साधकों को मिलकर बनाना है।

सत्संग: 2026-10-08 · प्रश्नोत्तर P13-0012 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0012/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0012/)

**प्रश्न 95.** गुरुदेव, आप कहते हैं कि नियम से परे उसकी यात्रा है, तो फिर आप हमें नियम में क्यों बांधते हैं? आप सिखाते हैं कि 10 दिशा में भोगी चलता है और 11वीं दिशा में योगी।

**उत्तर:** देखो, नियम कैसा है, आप समझो जरा। यहां क्या नियम है? क्या यह कोई आपको अलग से कुछ दिया जा रहा है? नहीं — मोबाइल स्विच ऑफ, किसी से व्यवहारिक बातें नहीं करना है और अपनों की कुटिया में रहना है, क्योंकि अपनों की कुटिया में आप सुरक्षित हो; बाहर गए तो वही प्रपंच चालू। तो नियम होकर भी नियम नहीं है। यह नियम आपको सबसे छुड़ा देगा। यह ऐसा नियम है।

सत्संग: 2026-10-06 · प्रश्नोत्तर P13-0131 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0131/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P13-0131/)

**प्रश्न 96.** गुरु जी, आप सबको अपने पास क्यों बुला रहे हो? सबका परिवार छुड़ा रहे हो क्या?

**उत्तर:** छुड़ा नहीं रहे। जिन साधकों को रहने में, भोजन में परेशानी हो रही है, जो साधना करना चाहते हैं, एकांत ढूँढ़ रहे हैं और नहीं मिल रहा, उनके सहयोग के लिए यह व्यवस्था है। अगर किसी के पास घर पे साधना करने की व्यवस्था है तो यहाँ आओ ही मत। जैसे मैंने झेला है — हमको एकांत नहीं मिल रहा था, एक-दो वक्त के भोजन के लिए बहुत सुनना पड़ता था — तो जब योग्य हुए तो ऐसी व्यवस्था की। जो भोजन, बिस्तर, कुटिया और इस व्यवस्था का सम्मान कर सके और सदुपयोग कर सके, उनके लिए है। चाहे ज्ञान, भक्ति, योग या ध्यान मार्ग से जाए, किस गुरु का चेला है, मुझसे मतलब नहीं; मेरा भाव है कि आपका आत्मिक स्तर कैसे बढ़े, उसमें सहयोग करना है।

सत्संग: 2026-05-18 · प्रश्नोत्तर P14-0155 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P14-0155/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P14-0155/)

**प्रश्न 97.** गुरु जी, कुटिया में एक महीना रहकर घर लौटे; एक दिन अच्छा लगा, फिर व्यवहार में प्रतिक्रिया न देने से घुटन होने लगी — क्या संसार में रहना ही बेईमानी है?

**उत्तर:** कुटिया का पता है, जिस रास्ते से गए हो वही रास्ता वापस आता है — आ जाइए। संसार में उचित लगे तो संसार में रहिए — जहां आप खुश रहें, जहां आपका आत्मिक कल्याण हो, वहां रहिए। चाहे जहां रहो, आपकी स्वतंत्रता है; बस इतना ध्यान दो कि मैं यहां हूं और मेरा आत्मिक स्तर उठ रहा है। अगर ऐसी जगह रहना पड़े जहां दबाव हो, संकोच हो और आत्मिक स्तर गिर रहा हो, तो उस स्थान और उस व्यक्ति का तुरंत त्याग कर देना चाहिए — चाहे सामने कोई भी हो, अपना हो या पराया।

सत्संग: 2025-01-03 · प्रश्नोत्तर P18-0085 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0085/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P18-0085/)

**प्रश्न 98.** गुरु जी, आप फोन पर बात क्यों नहीं करते? लाइव सुनने और कुटिया पर प्रत्यक्ष आने में क्या फर्क है?

**उत्तर:** एक दायरा होता तो कर भी लेते, दायरा तो है नहीं — एक से करूं तो सबसे करनी पड़ेगी, कितने कॉल आएंगे, फिर सत्संग ही नहीं हो पाएगा। एक काम करो — सत्संग सुनो, और बात करनी हो तो कुटिया पर आ जाओ, सीधा प्रत्यक्ष बात करो। प्रत्यक्ष में अलग ही बनता है: वहां से आप रूप और शब्द से (दो इंद्रियों से) समझ रहे हो, यहां तीन बढ़ जाती हैं — स्वाद, सुगंध, स्पर्श; पांचों इंद्रियों से समझते हो और संग भी मिल जाता है, जिससे चेतना का स्तर बढ़ता है।

सत्संग: 2024-09-29 · प्रश्नोत्तर P19-0015 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P19-0015/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P19-0015/)

**प्रश्न 99.** गुरु जी, कुटिया में साधना इतनी तेजी से क्यों होती है?

**उत्तर:** क्योंकि यहां आपका आगे का कर्म बंधन नहीं बंध रहा और पिछला बहुत तेजी से छूट रहा है — आप समझ से छुड़ा भी तो रहे हो। इसलिए यहां बहुत तेजी से यात्रा हो रही है।

सत्संग: 2024-12-26 · प्रश्नोत्तर P20-0003 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0003/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P20-0003/)

**प्रश्न 100.** गुरु जी, बुरी आदतों को छोड़ना चाहते हैं, छोड़ नहीं पा रहे हैं; क्या करें?

**उत्तर:** आओ, कुछ दिन यहां रहो, हम छुड़वा देंगे। यहां तो आने वाले समय में और कठिन नियम करूंगा — इधर-उधर भी ऐसे नहीं घूमना है, अपने आप में रहना है पूरी तरह। बस इंद्रियां जरूरत में उपयोग कीं और अपने आप में हो गए।

सत्संग: 2025-03-12 · प्रश्नोत्तर P27-0115 · [adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0115/](http://adhyatmikpratyakshgyan.com/qa/P27-0115/)